



Badal Saraswat

@badal_saraswat · Mar 2, 2021 · 29 tweets

Share Twitter Download ▾

#काँग्रेस_के_कुकर्म

2दशक से भी ज्यादा समय #दक्षिण_अफ्रीका में बिताकर 45साल का #गाँधी 1915 में भारत आता है(अँग्रेजों के पूरे सुनियोजित रूप से षड्यंत्र 🤬 के तहत और

👉 4 साल पहले 28वर्ष के एक वीर #अंडमान में एक कालकोठरी में बन्द होते हैं 🤔

वो थे- #विनायक_दामोदर_वीर_सावरकरजी।"

Read 📖



👉 अंग्रेज उनसे दिन भर कोल्हू में बैल की जगह हाँकते हुए तेल पेरवाते हैं,😭रस्सी बटवाते हैं😭और छिलके कूटवाते हैं।😭
और जेल में भयंकर यातनाएं देते हैं😡😡

👉 सोचो अगर ये सब हम में से किसी के साथ ऐसा हुआ होता तो या हो तो क्या ? हम इतना कुछ सहन कर पाते??
👉 लेकिन इतना कुछ होने पर भी वो

तमाम कैदियों को शिक्षित कर रहे होते थे🙏उन सभी में #राष्ट्रभक्ति_की_भावनाएँ प्रगाढ़ कर रहे होते थे और साथ ही दीवारों पर
कील,काँटों,कोयले और अपने नाखूनों की सहायता से #साहित्य की रचना कर रहे थे,
👉 उन्होंने हजारों रचनाएं(6000-10000)लिखीं और याद भी रखीं...

👉 वीर सावरकरजी एक खिड़की

की ओर एकटक देखते रहते थे,जहाँ से अन्य कैदियों ने पहले #आत्महत्या की थी,पीड़ा #असह्य होती रही थी।😭
#यातनाओं की सीमा पार हो रही थी।😭
अंधेरा उन कोठरियों में ही नहीं #दिलोदिमाग पर भी छाया हुआ था।😭
दिन भर बैल की जगह खटो,रात को करवट बदलते रहो😭

👉 सावरकरजी के सालों ऐसे ही बीते,कैदी

हमेशा उनकी इतनी इज्जत करते थे कि मना करने पर भी उनके बर्तन,कपड़े वगैरह धो देते थे,उनके काम में मदद करते थे,
👉 सावरकरजी से अंग्रेज बाकी कैदियों को दूर रखने की कोशिश करते थे और फिर भी अंत में बुद्धि की विजय हुई,उन्होंने अन्य
कैदियों को आत्महत्या से विमुख किया

👉 लेकिन #बुद्धिजीवी😡

#वामपंथी😡, #काँग्रेस_के_चाटुकार😡, #महागाँवारों😡 का कहना है कि उन्होंने मर्सी पेटिशन लिखा, सॉरी कहा, माफ़ी माँगी...
😡😡😡 अबे #*\$&\$^&

👉 नेहरू? गाँधी? कौन ? ? ? इनके बारे में कौन ? बतायेगा...

👉 दिक्कत तो ये है कि ये तुम्हारी #गुलामी और #निजिस्वार्थ😡 कहाँ ? बताने देगा तुमको😡😡😡

👉 ये तो हम सभी मिलकर ही बताएंगे,तो अपने चहेतों का भी भी सच जान लो...

👉 अगर #सावरकरजी ब्रिटिश को "I beg to remain your obedient servant" लिखें तो वो तुम्हारी नजर में माँफी मांगने

वाले 🙄 और

👉 जब बंद कमरों में चरखा चलाने वाला #गाँधी 🙄 अंग्रेज अधिकारी को, "I have to remain your Royal-

RENUNCIATION OF MEDALS

MAHATMA GANDHI'S LETTER TO
H. R. H. THE DUKE OF CONNAUGHT

The following letter has been addressed by Mr. Gandhi to His Royal Highness the Duke of Connaught:—

Sir,

Your Royal Highness must have heard a great deal about non-co-operation, non-co-operationists and their methods and incidentally of me, its humble author. I fear that the information given to Your Royal Highness must have been in its nature one-sided. I owe it to you and to my friends and myself that I should place before you what I conceive to be the scope of non-co-operation as followed not only by me but my closest associates such as Messrs. Shaukat Ali and Mahomed Ali.

For me it is no joy and pleasure to be actively associated in the boycott of your Royal Highness' visit—I have tendered loyal and voluntary association to the Government for an unbroken period of nearly 30 years in the full belief that through that way lay the path of freedom for my country. It was therefore no slight thing for me to suggest to my countrymen that we should take no part in welcoming Your Royal Highness. Not one among us has anything against you as an English gentleman. We hold your person as sacred as that of a

every Englishman to appreciate the view-point of the non-co-operationists.

I beg to remain,

Your Royal Highness's faithful servant,

(Sd.) M. K. GANDHI.

February. 1921

THE GREAT

THE GREATEST THING

It is to be wished that non-co-operationists will

clearly recognise that nothing can stop the onward

march of the nation as violence. Ireland may

gain its freedom by violence. Turkey may regain

her lost possessions by violence within measurable

distance of time. But India cannot win her

freedom by violence for a century, because her

people are not built in the manner of other nations.

They have been nurtured in the traditions of suffer-

ing. Rightly or wrongly, for good or ill, Islam

too has evolved along peaceful lines in India. And

I make bold to say that, if the honour of Islam is to

be vindicated through its followers in India, it will

only be by methods of peaceful, silent, dignified,

conscious, and courageous suffering. The more I

study that wonderful faith, the more convinced I

become that the glory of Islam is due not to the

sword but to the sufferings, the renunciation,

and the nobility of its early Caliphs. Islam

has, however, been to stop violence. The school of Hijrat has received a check if it has not stopped its activity entirely. I hold that no repression could have prevented a violent eruption if the people had

Ultimatum to Lord Chelmsford.

25

not presented to them a form of direct action involving considerable sacrifice and ensuing success if such direct action was largely taken up by the public. Non-co-operation was the only dignified and constitutional form of such direct action, for it is the right recognised from times immemorial of the subject to refuse to assist a ruler who misrules.

At the same time I admit the non-co-operation practised by the mass of people is attended with grave risks. But in a crisis such as has overtaken the Mussalmans of India no step that is unattended with large risks can possibly bring about the desired change. Not to run some risks will be to court much greater risks if not virtual destruction of law and order.

But there is yet an escape from non-co-operation. The Mussalman representation has requested Your Excellency to lead the agitation yourself as did your distinguished predecessor at the time of the South African trouble. But if you cannot see your way to do so, non-co-operation becomes a dire necessity. I hope Your Excellency will give those who have accepted my advice and myself the credit for being actuated by nothing less than a stern sense of duty.

I have the honour to remain,
Your Excellency's obdt. servant.
(Sd.) M. K. GANDHI.

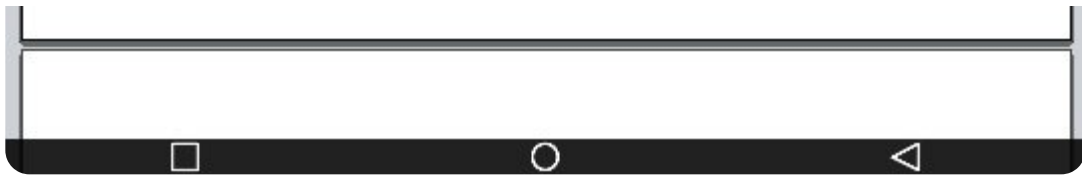
Laburnum Road,
Gamdevi, Bombay.
22nd June, 1920.

expressing their opinions freely. Another is on his trial in Lahore for having expressed similar opinions. One in the Oudh District is already imprisoned. Another awaits judgment. You should know what is going on in your midst. Propaganda is being

32 *Famous Letters of Mahatma Gandhi.*

carried on in anticipation of repression. I invite you respectfully to choose the better way and make common cause with the people of India whose salt you are eating. To seek to thwart their aspirations is disloyalty to the country.

I am,
Your faithful friend,
M. K. GANDHI.



highness faithful servant (M K Gandhi)"लिखें 🙄

तो भारत का भाग्य विधाता वाह रे #कांग्रेसियों 🙄, #चाटुकारों 🙄...

अबे कतई जाहिल बेवकूफ किस्म के हो का बे 🙄 🙄 🙄

आखिर अपनी सोच को कहाँ तक बचाने की कोशिश करोगे शर्म लगती है या नहीं जीने में और ये तुम्हारा #नेहरू 🙄 आशिक रंगीला 📢 का चाचा 🙄 🙄

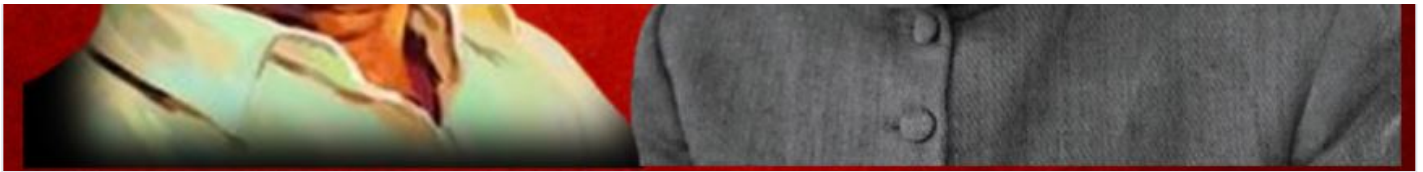
👉 साल 1923 में #नाभा_रियासत में गैर कानूनी ढंग से प्रवेश करने पर औपनिवेशिक शासन ने नेहरू को जब 2 साल की सजा सुनाई गई थी, तब नेहरू ने भी कभी भी #नाभा_रियासत में प्रवेश न करने का #माँफीनामा देकर सिर्फ और सिर्फ मात्र #दो_हफ्तों में ही अपनी सजा माफ करवा ली थी... 🙄 🙄 🙄

👉 बस मात्र दो हफ्ते में, इस नेहरू के बारे में भी नहीं बताओगे 🙄 🙄 🙄



[google.com/amp/s/zeenews....](https://google.com/amp/s/zeenews...)





google.com/amp/s/zeenews....

नेहरू का वो माफीनामा जो साबित करता है कि सावरकर वीर क्यों हैं?

👉 #वीर_सावरकर जी ने नानासाहब पेशवा, महारानी लक्ष्मीबाईजी और वीर कुँवरसिंहजी, तात्या टोपे जैसे #सन1857 के ना जाने कितने ही वीर जो इतिहास में दबे हुए थे।

उन 1857 के स्वतंत्रता संग्राम को "सिपाही विद्रोह" बताया गया था।

👉 तब इसके पर्दाफाश के लिए 20-22 साल के एक युवक लंदन की एक लाइब्रेरी

का किसी तरह एक्सेस लेकर और दिन-रात लगकर अँग्रेजों के एक के बाद एक दस्तावेज पढ़कर #सच्चाई की तह तक जाते हैं और जो #भारतवासियों से छिपाया गया था।

👉 उस स्वतंत्रता संग्राम को उन्होंने साबित कर दिया कि वो "सैनिक विद्रोह" नहीं है, हमारे भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था।

👉 दुनिया में

कौन ? सी ऐसी किताब है, जिसे प्रकाशन से पहले ही प्रतिबंधित कर दिया गया था 😡 ?

👉 इस पुस्तक का पहला संस्करण #हॉलैंड में छपा था और वहां से #पेरिस होते हुए भारत पहुंचा था,

👉 उन सभी अमर बलिदानियों की गाथा उन्होंने जन-जन तक पहुँचाई।

👉 जिनको #भगतसिंहजी ❤️ जैसे सरीखे क्रांतिकारियों ने मिलकर

पढ़ा और अनुवाद किया और उनके ही दिखाए गए मार्गदर्शन पर चले...

👉 अँग्रेज इतने डरे हुए थे उनसे कि हर वो इंतजाम किया गया, जिससे वो पुस्तक भारत न पहुँचे,

👉 तो #क्रांति_की_ज्वाला में घी की #आहुति पड़ गई थी, #कलम और #दिमाग दोनों से अँग्रेजों से लड़ने वाले #वीर_सावरकरजी थे। 🙏🙏🙏

दलितों के उत्थान के लिए काम करने वाले #वीर_सावरकर थे।

👉 विवेक आर्य बड़े भईया जी का लेख 🙌🙌🙌

क्लिक On लिंक 📌📌📌

facebook.com/49805424427070...

👉 11 साल कालकोठरी में बंद रहने वाले सावरकर थे।

👉 #हिंदुत्व को पुनर्जीवित कर के राष्ट्रवाद की अलख जगाने वाले सावरकर थे।

👉 साहित्य की विधा में

पारंगत योद्धा सावरकरजी थे।

👉 लेकिन आज़ादी के बाद क्या ? मिला उन्हें 😞😞😞

इन देशद्रोहियों के द्वारा बार-बार किया गया अपमान 😡😡😡

👉 #नेहरू 😡, #गाँधी 😡 व #मौलाना_अबुल_कलाम 😡 जैसों ने तो हमेशा से सत्ता की मलाई चाटी 😡😡😡 और

👉 उसके बावजूद इनका दिल नहीं भरा तो सावरकरजी को गाँधी वध में

फँसा दिया 😡, उनको गिरफ्तार किया गया, पेंशन तक नहीं दी एवं प्रताड़ित किया सो अलग 😡😡😡

👉 60 के दशक में उन्हें फिर से #गिरफ्तार किया गया और प्रतिबंध लगा दिया, उन्हें #सार्वजनिक_सभाओं में जाने से मना कर दिया गया 😡😡😡

👉 और ये सब उसी भारत में हुआ, जिसकी स्वतंत्रता के लिए उन्होंने अपना

पूरा जीवन, अपना परिवार, अपना भविष्य खपा दिया। 😞😞😞😞

👉 आज़ादी के ऐसे सर्वश्रेष्ठ नेतृत्वकर्ता, सभी का मार्गदर्शन करने वालों से उनकी ही #आज़ादी उसी देश में छीन ली गई 😞😞

👉 जिसे उन्होंने आज़ाद करवाने में योगदान दिया था, #शास्त्रीजी जब PM बने थे, तो उन्होंने पेंशन का जुगाड़ किया था*

👉 वीर सावरकर जी हमेशा कालापानी में साथी कैदियों को समझाते थे कि "धीरज रखो, एक दिन आएगा जब ये जगह एक दिन
#निर्दोष बन जाएगी।"

👉 आज इतनी मशहूर जगह हो या ना हो,लेकिन आने वाले #वक्त में एक समय ऐसा जरूर होगा,जब लोग कहेंगे कि देखो,इन्हीं कालकोठरियों में हमारे वीर सावरकरजी सहित बहुत से

हिंदुस्तानी वीर क्रान्तिकारी बन्द थे।

👉 सावरकरजी कहते थे कि"तब उन्हीं #कैदियों की यहाँ #प्रतिमाएँ होंगी,आज आप अंडमान जाते हैं तो सीधा"वीर सावरकर इंटरनेशनल एयरपोर्ट"पर उतरते हैं।

👉 वहाँ सेल्युलर जेल में उनकी प्रतिमा लगी है और उस कमरे में हमारे प्रधानमंत्री #मोदीजी❤ भी जाकर ध्यान

धारण करते हैं,जिसमें #सावरकरजी को रखा गया था 🙏🙏

👉 कांग्रेस 🙄 के जमाने मे छुपे छुपाये हुए #डॉक्यूमेंट #वीर_सावरकरजी ने खुद के लिए कभी माँफी नहीं माँगी बल्कि सारे कैदियों के लिए दया याचिका मांगी थी:- (सबूतों में)इस लेख में जो फोटो अपलोड किया गया है उसमें अंडरलाइन किए हुए शब्दों को

Minute Paper. J & P. 806/18 Judicial and Public Department.

NOTES. Letter No. 64 Dube (Hons) Dated 9 January 1918. Received 14 March 1918.

Formally acknowledged

Put by	Date	Initials	SUBJECT
Under Secretary Parl. Under Sec.	8-5	W.H.	Petition by U.D. Samdhan for an
Committee	9	W.H.	amnesty to all political offenders
Under Secretary Parl. Under Sec.	14	W.H.	(not necessarily including himself)
Council			No action taken upon it

Auty 14/3/18

© संकेत कुलकर्णी (लंडन)

Previous Papers.

Minute.

For information.

The petition reads well; - note the history of Samdhan is remembered. He & the others attempted to escape from the British hands.

which when tried and convicted of
murder was sentenced to transportation for life.
by the Bombay High Court in 1911.

He was proved to have started the secret
revolutionary society 'Bhikha Kala', afterwards
Chhinnu Dharwad (Young India), before 1906.

In 1906 he came to London: from there he sent out
his translation of the life of Mazzini, published
in India in 1907. He was a prominent member
in Krishna Rao's 'Maha Karna' and the
Indian League of Independence, a publication of
the month of 1907; was in close touch with

22182 1779 1000 017

No. 64

Government of India,
Home Department,
(Political)



Delhi, the 9th January 1918.

To

Sir T.W. HOLDENESS, K.C.B., K.C.S.I.,
His Majesty's Under Secretary of State for
I N D I A.

Sir,

With reference to the correspondence ending with
the Home Department letter No. 89 dated the 9th Feb-
ruary 1911, I am directed to forward for the informa-
tion of the Secretary of State a copy of a petition
addressed to the Government of India by Vinayak
D. Savarkar (now a prisoner in the Andaman Islands)
in which he prays that a general amnesty may be grant-
ed to all persons convicted of political offences.

It is not proposed to take any action on the
petition, and V.D. Savarkar is being merely informed
through the Superintendent, Port Blair, that his
representation has been laid before the Government of
India.

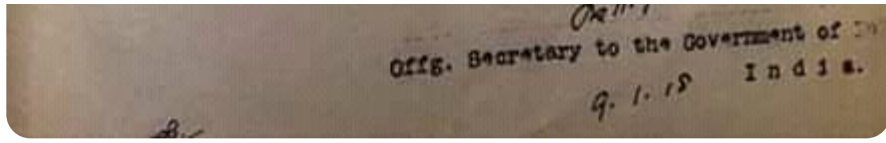
I have the honour to be,

Sir,

Your most obedient servant,



Signature



पढ़ लीजिये सावरकरजी ने अपने लिए नहीं बल्कि **#अंडमान_जेल** में बंद सारे कैदियों के लिए माँफी की याचिका भेजी थी...

👉 इस समय देश में **#वीर_सावरकरजी** पर आये दिन बहस चल रही होती है, अपनी झूठ की फैक्ट्री चलाने वाले अपनी आदत के मुताबिक बढ़ा-चढ़ा कर झूठ फैलाने में बेहद आगे है। 😡 बार-बार हर बार

साजिश के तहत यह झूठ फैलाया जाता है 😡 कि "कालापानी जैसे सजा काटने वाले महान स्वातंत्र्य वीर सावरकर ने अंग्रेजों से माँफी 😡 मांगी थी।

👉 जबकि **#सच्चाई** यह है कि "वीर सावरकरजी ने अपने लिए नहीं बल्कि अंडमान जेल में बंद सारे कैदियों के लिए एक याचिका लिखी थी।

मटमैला रंग का दस्तावेज का जो

PDF फोटो है वह पूरी तरह से असली है...

👉 जो **#संकेत_कुलकर्णीजी** ने **#लंदन** से प्राप्त की है उसे आप स्वयं पढ़ सकते हैं, जिसमें वह साफ शब्दों में अंडमान जेल के सारे कैदियों के लिए दया याचिका की मांग कर रहे हैं।

👉 अब आप* और कुछ विरोधी भी कहेंगे कि "सावरकरजी ने सारे कैदियों के लिए माँफी

की याचिका क्यों की थी?

👉 तो इसके लिए आपको **#वीर_सावरकरजी** के द्वारा लिखी अंग्रेजी में एक पुस्तक पढ़नी होगी उस पुस्तक का नाम है। (**#My_Transporation_Life**)...

👉 इस पुस्तक में टोटल 307 पेज है, यदि आपके पास पुरी पुस्तक पढ़ने का समय नहीं है तो आप मत पढ़िये...*

👉 लेकिन इस पुस्तक के



पेज नम्बर 69,219,220 और 221 पढ़ने महत्वपूर्ण एवम जरूरी हैं।

👉 मूल रूप से यह पुस्तक #मराठी_भाषा में थी, जिसे #अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है।👉

👉 खैर, #सावरकरजी को सारे कैदियों के लिए माँफी माँगने की याचिका की जरूरत क्यों पड़ गई थी???

👉 तो इसका उत्तर यह #किताब दे देती है कि"

#इंदू_भूषण नामक कैदी की #आत्महत्या से वीर सावरकरजी इतने दुखी हो गये थे कि "उन्होंने सारे कैदियों के लिए माँफी याचिका लिख डाली थी।"

👉 आप इसका विवरण इस पुस्तक के #Indu_Had_Hanged_imself_Last_Night में पढ़ सकते हैं।👉

👉 वीर सावरकरजी ने एक जगह इस पुस्तक में खुद लिखा है कि

"मैं एक #बैरिस्टर होकर ऐसी गलती कैसे कर सकता था???

👉 यदि मैं पत्र लिखता तो अनेक अंग्रेज अफसरों के हाथों में जाती और वे इसे या तो दबा लेते थे, नहीं तो फाड़ देते थे...

👉 क्योंकि अंडमान का कालापानी के सजा मानवाधिकार के विरुद्ध था और उन्हें लज्जित होना पड़ता।

👉 यह पुस्तक PDF में आपको

Google पर उपलब्ध मिल जाएगी, इसे डाउनलोड कर आप सभी पढ़ सकते हैं।

Book Link 📖 📖 📖

[google.com/url?sa=t&source=...](https://www.google.com/url?sa=t&source=...)

👉 वीर सावरकर जी के खिलाफ #नेहरू 😡 की साजिश 📖 📖 📖

With Video:-

[facebook.com/49805424427070...](https://www.facebook.com/49805424427070...)





Badal Saraswat

@badal_saraswat

झूठी शान के परिंदे ही ज्यादा फड़फड़ाते हैं बाज़ की उड़ान में आवाज़ नहीं होती तजुबों ने सिखाया है शेरों को शिकार करना यूं बेवजह दहाड़ मारकर शिकार किया नहीं जाता..



Follow on Twitter

